

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमदध्यात्मरामायणे युद्धकाण्डे ब्रह्मदेव कृता
॥ श्रीरामस्तुतिः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीरामस्तुतिः ॥

रन्दे देरं रिष्णुमशेषस्थितिहेतुं
 एरामध्याअञ्जानिभिरन्तर्हृदि भार्यम्।
 हेयाहेयद्वन्द्वरिहीनं परमेकं
 सतामात्रं सर्रहृदिस्त्रुं दृशिरूपम् ॥ 1 ॥

प्राणापानौ निश्चयबुद्ध्या हृदि रुद्धुरा
 छिन्ना सर्रं संशयबन्धं रिषयौघान्।
 पश्यन्तीशं यं गतमोहा यतयस्तुं
 रन्दे रामं रत्नकिरीटं ररिभासम् ॥ 2 ॥

मायातीतं माधरमाद्यं जगदादिं
 मानातीतं मोहरिनाशं मुनिरन्द्यम्।
 योगिधेयं योगरिधानं परिपूर्णं
 रन्दे रामं रञ्जितलोकं रमणीयम् ॥ 3 ॥

भाराभारप्रत्ययहीनं भरमुथै -
 र्योगासक्तेरर्चितपादाम्बुजयुगम्।
 नित्यं शुद्धं बुद्धमनन्तं प्रणराख्यं
 रन्दे रामं रीरमशेषासुरदारम् ॥ 4 ॥

एरं मे नाथो नाथितकार्याखिलकारी
 मानानीतो माधररूपोहखिलधारी।
 भक्त्या गम्यो भारितरूपो भरहारी
 योगाभ्यासैर्भारितचेतःसहचारी ॥ 5 ॥

ংরামাদ্যন্তং লোকততীনাং পরমীশং
লোকানাং নো লৌকিকমানৈরধিগম্যম্।
ভক্তিপ্রদ্বাভারসমেতৈর্ভজনীযং
বন্দে রামং সুন্দরমিন্দীরনীলম্ ॥ 6 ॥

কো রা জ্ঞাতুং ংরামতিমানং গতমানং
মায়াসক্তো মাধব শক্তো মুনিমান্যম্।
বৃন্দারণ্যে বৃন্দিতবৃন্দারকবৃন্দং
বন্দে রামং ভবমুখবৃন্দ্যং সুখকন্দম্ ॥ 7 ॥

নানাশাস্ত্রৈর্বেদকদম্বৈঃ প্রতিপাদ্যং
নিত্যানন্দং নিরীষযজ্ঞানমনাদিম্।
মৎসেৱার্থং মানুষভারং প্রতিপন্নং
বন্দে রামং মরকতবর্ণং মথুরেশম্ ॥ 8 ॥

শ্রদ্ধাযুক্তো যঃ পঠতীমং স্তবমাদ্যং
ব্রাহ্মং ব্রহ্মজ্ঞানরিধানং ভুরি মর্ত্যঃ।
রামং শ্যামং কামিতকামপ্রদমীশং
ধ্যাংরা ধ্যাতা পাতকজালৈর্বিগতঃ স্যাৎ ॥ 9 ॥

॥ শ্রীরামস্তুতিঃ সমাপ্তা ॥